بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-15.09.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

मोहतरमा सय्यदा अमतुल क़ुद्दूस साहिबा पतनी साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब का सद्वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 15 सितम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- यह अल्लाह तआला का नियम है कि जो इंसान भी इस दुनिया में आया, उसने एक समय व्यतीत करके इस दुनिया से विदा हो जाना है परन्तु भाग्य शाली होते हैं वे लोग जिनकी केवल नेकियाँ याद होती हैं, जो मानवता के लिए लाभदायक होते हैं, जो दीन को दुनिया पर प्रमुख करने का सक्रिय उदाहरण होते हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल के आदेशानुसार कर्म करने वाले होते हैं, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने का प्रयास करने वाले होते हैं, जो ख़िलाफ़ते अहमदिया से वास्तविक आज्ञा पालन करने वाले होते हैं, जो प्राणियों के अधिकारों को देने का यथासामर्थ्य कोशिश करने वाले होते हैं, जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता सदैव प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाले होते हैं, जिनके लिए हर एक ज़बान से केवल प्रशंसात्मक बातें ही निकलती हैं और यूँ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार उनके लिए जन्नत अनिवार्य हो जाती है।

इस समय मैं एक ऐसे ही अस्तित्व का वर्णन करने लगा हूँ। यह वर्णन है मुकर्रमा अमतुल क़ुद्दूस साहिबा का जो हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इसमाईल साहब की बेटी और साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब की पतनी थीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु की बहू थीं। ये रहती तो क़ादियान में थीं परन्तु पिछले दिनों अपनी बेटियों के पास रबवा आई हुई थीं जहाँ 96 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला की कृपा से 1/9 भाग की मूसियः थीं।

1951 के जलसा सालाना के अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने आपका निकाह साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब के साथ पढ़ाया। विदाई के समय हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु अपने बेटे के बजाए लड़की वालों की ओर से शामिल हुए थे।

अल्लाह तआला ने मरहूमा को तीन बेटियाँ तथा एक बेटा प्रदान किया था। एक बेटी अमतुल अलीम साहिबा इस समय सदर लजना पाकिस्तान हैं, जो मुकर्रम मन्सूर अहमद ख़ान साहब वकीले आला तहरीके जदीद की पतनी हैं। दूसरी बेटो अमतुल करीम साहिबा कैपटन माजिद साहब की पतनी हैं तथा तीसरी बेटी अमतुर्रऊफ़ साहिबा डाक्टर इब्राहीम मुनीब साहब की पतनी हैं। मिर्ज़ा कलीम अहमद इनके बेटे हैं जो अमरीका में रहते हैं।

साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब जब अपनी शादी के अवसर पर पाकिस्तान आए हुए थे और अभी उनकी शादी को कुछ दिन ही हुए थे तथा आप अपनी पतनी को क़ादियान लेकर जाने के लिए सरकारो कागज़ात तय्यार करवा रहे थे, ऐसे में जैसा कि पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान के सम्बंधों में उतार चढ़ाव आता रहता है, तो उन दिनों भी ऐसा ही खिंचाव पैदा हो गया। ऐसे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया कि पतनी के कागज़ात तो बनत रहेंगे, तुम उसे छोड़ो तथा तुरन्त क़ादियान वापस चले जाओ क्यूँकि वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वंश का कोई व्यक्ति होना चाहिए।

फ़रमाया तुरन्त जहाज़ में सीट बुक कराओ और यदि जहाज़ नहीं मिलता तो भी तुम्हारा जाना आवश्यक है चाहे जहाज़ चार्टर ही क्यूँ न करवाना पड़े। फ़रमाया यदि तुमने अपना नमूना पेश न किया और क़ुर्बानी न दी तो लोग किस तरह क़ुर्बानी देंगे।

जहाँ यह क़ुर्बानी साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब की थो, वहीं अमतुल क़ुद्दूस साहिबा को भी क़ुर्बानी थी। यह पता नहीं था कि कब कागज़ात पूरे होंगे, स्थिति गम्भीर थी, इसके बावजूद ख़लीफ़-ए-वक़्त का आदेश था इस लिए बड़ी ख़ुशी से अपने पति को विदा किया तथा दीन को दुनिया पर प्रमुख किया।

मुकर्रमा अमतुल क़ुद्दूस साहिबा के कागज़ात पूरे होने में लगभग एक साल का समय लगा और जब आप क़ादियान जाने लगीं तो आप फ़रमाती ह कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने मुझे निर्देश दिया कि उम्मे नासिर के मकान में रहना जहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क क़दम अधिक पड़े हैं तथा उनके आंगन में हुज़ूर ने दर्स भी दिया हुआ है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने आपको यह भी उपदेश दिया कि लजना की जमाअतों को एकत्र करना है अतः साहिबज़ादी अमतुल क़ुद्दूस साहिबा ने क़ादियान जाकर जमाअत की महिलाओं को एकत्र करने तथा उनके साथ सहानुभूति करने में अति महत्त्व पूर्ण भूमिका निभाई।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने लंदन पहुंचने के बाद पहले जुम्अः के ख़ुत्बः में यूराप में इस्लाम के प्रकाशन के लिए दो केन्द्र स्थापित करने के लिए धन के बलिदान की तहरीक की घोषणा फ़रमाई तो मुकर्रमा अमतुल क़ुद्दूस साहिबा जो सदर लजना भारत थीं, आपके नेतृत्व में लजना भारत ने बढ़ चढ़ कर धन के बलिदान की तौफ़ीक़ पाई। आपने स्वयं भी अपने सारे आभूषण इस तहरीक में पेश कर दिए।

1991 में जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह क़ादियान तशरीफ़ ले गए तो उस अवसर पर आप रह. ने लजना क़ादियान के धन बलिदान करन का अति सुन्दर रूप में वर्णन फ़रमाया। आपने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल के साथ हिन्दुस्तान की लजनात में, सबके विषय में तो मैं नहीं कह सकता, परन्तु क़ादियान की लजना के सम्बंध में कह सकता हूँ कि धन के बलिदान में ये अद्वित्तीय नमूने दिखलाने वाली है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने जब उनको क़ादियान भिजवाया तो यह भी उपदेश दिया था कि लजना की जमाअतों को एकत्र करना है। आप वहाँ जाते ही पहले जर्नल सैक्रेट्री क़ादियान बनीं, फिर 1955 में स्थानीय सदर लजना तथा फिर सदर लजना भारत के रूप में आपका चयन हुआ। आपकी इन सेवाओं की अवधि 46 साल बनती है।

अमतुल क़ुद्दूस साहिबा ने क़ुर्आन करीम की बड़ी सेवा की, क़ादियान की 250 बच्चियों को क़ुर्आन करीम पढ़ाया। भारत में जिन बच्चियों ने एफ़.ए. इत्यादि किया होता, वे तीन तीन महीने के लिए क़ादियान आकर रहतीं और आप उन्हें क़ुर्आन का अनुवाद पढ़ातीं। आपने लजना को बड़े परिश्रम से संगठित किया। मेहमान नवाज़ी की मूल्यवान विशेषता थी। आपकी बेटी कहती हैं कि आपने हमारे अब्बा का बड़ा साथ दिया, अति निर्धनों वाली स्थिति थी, दोपहर में केवल मूंग की दाल होती थी, अब्बा ने दूध दही के लिए एक भेंस रखी हुई थी, कोई मेहमान आता तो जो कुछ उपलब्ध होता, आप निःसंकोच पेश कर देतीं।

आप एक अच्छी पतनी थीं, कठिन परिस्थितियों में साथ देने वाली थीं। कभी कुछ नहीं मांगती थीं, जो भी गुज़ारा मिलता ख़ुशी से उसी में गुज़ारा करतीं। स्वच्छता पसन्द करने वाली तथा सुन्दर आचरण वालो महिला थीं। अन्तिम आयु में आपकी दृष्टि समाप्त हो गई थी तथा यन्त्र के साथ अति कठिनाई से कुछ सुनना सम्भव होता था परन्तु इसके बावजूद बड़ी ख़शी से जीवन यापन किया। जब हाल पूछा जाता तो सदैव अलहम्दुलिल्लाह कहा करतीं। कोई भी तहरीक होती ख़लीफ़-ए-वक़्त की ओर से तो पहला चन्दा क़ादियान में मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब की ओर से और उनकी पतनी की तरफ़ से होता था। उनकी बेटी कहती हैं कि हम क़ुर्आन करीम पढ़ने में कोई ग़लती करते तथा हमारी अम्मी किसी दूसरे कमरे में होतीं तो वहीं से हमें सही करवा दिया करती थीं, ऐसा लगता था जैसे उनको क़ुर्आन करीम याद हो।

लोगों की ख़ुशी में तथा दुःख के अवसरों पर बावजूद बीमारी के सदैव शामिल हुआ करतीं। क़ादियान की बच्चियों को सिलाई सिखातीं। आपने क़ादियान में सबके साथ मिल जुल कर रहने का कल्चर पैदा कर दिया था।

भारत विभाजन के पश्चात रतन बाग़ लाहौर में तथा फिर रबवा के कच्चे घरों में हज़रत अम्मा जान रज़ीयल्लाहु अन्हा को क़ुर्आन करीम तथा मलफ़ूज़ात सुनाने की तौफ़ीक मिलती रही। आपने वसीय्यत में अपनी सम्पत्ति के अंश का चन्दा अपने जीवन काल में ही अदा कर दिया था। इसी तरह तहरीके जदीद क दफ़तर अव्वल में शामिल थीं। अपने बच्चों को नमाज़ अव्वल समय पर अदा करने का उपदेश देतीं।

अनेक बच्चियों को आपने पाला, उनकी बेहतरीन तर्बियत की तथा फिर उनकी शादियाँ करवाईं। दर्वेशी के ज़माने में जबकि आर्थिक स्थिति अत्यंत दुर्बल थी किसी दर्वेश की बेटी की शादी होती ता आप अपने आभूषण उसे पहनने के लिए दे आतीं, जब तक दिल करे इन्हें पहनो, फिर किसी दूसरी बच्ची की शादी होती तो आभूषण उसे दे दिया जाता।

लोग अपनी अमानतें आपके पास रखवाते और आप बड़ी ईमानदारी के साथ सब अमानतों का ध्यान रखतीं। अनेक बच्चिया को आचरण सिखाया, उनके दहेज तय्यार किए, दर्वेशों की विधवाओं को ईदी देने स्वयं जाया करतीं।

आपके बेटे कहते हैं कि अधिकांश अतिथि दारुल मसीह में ठहरते थे और हमारी वालिदा गयारह बारह साल के बच्चों को स्वयं ट्रेनिंग देतीं कि किस तरह कमरों में मेहमानों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना है। सरकारी ओहदेदारों की पतनियों को भी जमाअत का परिचय करवाया करती थीं। निर्धनों का बड़ा ध्यान रखा करती थीं।

साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब के निधन के बाद दस साल तक क़ादियान में रहीं, फिर जब स्वास्थय बिगड़ना शुरु हुआ तो उनकी बच्चियाँ उन्हें इलाज के लिए रबवा ले आईं, इसके बावजूद यही कहा करतीं कि मैंने ख़लीफ़-ए-वक़्त की अनुमति के बिना लम्बी अवधि तक क़ादियान से बाहर नहीं रहना। मुझे उन्होंने लिखा था तो मैंने यही जवाब दिया कि आप जितने समय तक रहना चाहें, रह सकती हैं।

अनेक ग़ैर मुस्लिम भी आपके जनाज़े में शामिल हुए। क़ादियान के लोग आपसे और आप क़ादियान के लोगों से बड़ा प्रेम करती थीं। क़ादियान की महिलाओं के बड़े पत्र आए हैं जिन्होंने बड़ी मुहब्बत से आपका वर्णन किया है। इसी तरह क़ादियान के पुराने रहने वालों की पुरुष संतानों ने भी लिखा है कि उन्होंने हमें एक माँ की तरह पाला।

ख़िलाफ़त से आपका बड़ा गहरा सम्बंध था। विनयता एवं विनम्रता की अभिव्यक्ति जिस तरह उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. से की थी, वह सम्बंध जारी रहा तथा मुझसे भी वही सम्बंध बना रहा, यह एक उदाहरण है। यहाँ भी मुझे मिलीं तो अत्यंत सभ्यता एवं आदर के साथ। 2005 में क़ादियान गया हूँ तो बड़ी तंम्यता के साथ मेहमान नवाज़ी की कोशिश की, फिर हर एक भेंट के समय ख़ुश होतीं जो उनके चेहरे से प्रकट होती थी। 2005 में बावजूद स्वास्थय ख़राब होने के क़ादियान से वापसी की यात्रा के समय देहली तक आईं। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए तथा उनकी संतान को उनकी नेकियाँ जारी रखने का सामर्थ्य प्रदान करे, आमीन।

क़ादियान के लोगों को उन्होंने जिस मुहब्बत से रखा, अल्लाह तआला उन्हें यह तौफ़ीक़ दे कि वह आपस में भी इसी मुहब्बत से रहें। अब क़ादियान में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के वंश का सीधे रिश्ते अथवा सम्बंध वाला तो कोई मौजूद नहीं है। अल्लाह करे कि ऐसे हालात हो जाएँ कि कोई वहाँ जा सके। अल्लाह तआला मरहूमा के दर्जे बुलन्द करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम मुहम्मद राशि अहमदी साहब यू के का उपस्थित जनाज़ा तथा मुकर्रम जमाल साहब अफ्रीक़न का जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई तथा मृतकों के सद्‌गुण बयान फ़रमाए और दर्जों की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ
وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ
یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131